सम्पादकीय

वैशाख का मास हर वर्ष आता है और हर वर्ष चला जाता है । लेकिन 1699 का ऐसा वैशाख आया था जिसने पूरे भारत का इतिहास ही बदल दिया और इसके साथ ही पंचाग में वैशाख को भी अमर कर दिया है । इस दिन भारत की दस गुरु परंपरा के दशम गुरु श्रीगोविंद सिंह जी ने शिवालिक की उपत्यकाओं में एक राष्ट्रीय महासम्मेलन का आयोजन किया था। यह सम्मेलन धर्म की जय के लिए था और अधर्म के क्षय के लिए था। स्वतंत्रता मानव का पहला धर्म है और परतंत्र रहना, किसी दूसरे का गुलाम बन कर रहना सबसे बडा अधर्म है । भारत परतंत्र देश था यहां मध्य एशिया से आये हुए मुगलों की सत्ता थी । स्वतंत्रता का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था । गुरु गोविंद सिंह जी ने उसी रास्ते की खोज के लिए वैशाख के प्रथम दिवस को देशवासियों का महासम्मेलन आहूत किया । मह़ीनों पहले इसकी तैयारी शुरु हो गई होगी। इस महासम्मेलन की सूचना धीरे- धीरे देश भर में फैल गई। पंजाब से लेकर सुदूर महाराष्ट्र तक, उससे भी आगे गुजरात तक, उत्तर प्रदेश के गंगा यमुना के मैदानों को पार करती हुई जगन्नाथ पुरी तक। सब जगह चर्चा हो रही थी कि दशम गुरु ने देश के कोने-कोने से देशवासियों को शतद्रु के किनारे पर आमंत्रित किया है । सभी स्थानों से लोग पहुंचे और उसके बाद क्या हुआ यह इतिहास है। देश के पांचों हिस्सों से ऐसे नरवीर निकले जिन्होंने यमराज को चुनौती दे दी । वे मृत्यु के भय से मुक्त हो गए । उन्होंने अपने प्राण गुरु को अर्पित कर दिये। उसके बाद उनका नया जीवन हुआ। अब वे धर्म के योद्धा बन चुके थे। अब वे गुरु गोविंद सिंह के खालसा थे, अब वे भारत माता के धर्म सैनिक थे । खालसा की स्थापना ने देश में एक ऐसा ज्वार उत्पन्न किया जिसमें कालांतर में मुगल सत्ता को उखाड़ फैंका ।

क्या इसे भी इतिहास का संयोग ही कहा जाए कि मुगल सत्ता के बाद जब ब्रिटिश सत्ता ने भारत पर कब्जा कर लिया तो जलियांवाला बाग में उस सत्ता को चुनौती देने के लिए पंजाब के गांवों -गावों से लोग एकत्रित हुए तो उन्होंने इसके लिए भी वैशाखी का दिन ही चुना । जलियांवाला बाग में ब्रिटिश सत्ता ने जो भयंकर नरसंहार किया उसने ब्रिटिश सत्ता के कफन में कील का काम ही किया । वैशाखी इस प्रकार से धर्मयुद्ध का पर्याय बन गई । जो धर्म के लिए लडता है उसे मृत्यु में भी आनंद की प्राप्ति होती है। इसलिए हंसता हुआ, नृत्य करता हुआ मृत्यु की ओर अग्रसर होता है। वह उसके लिए उसके जीवन का मृत्यु पर्व है। परंतु दुर्भाग्य से वही किसान जो कभी रणभूमि में भी भंगड़ा का नृत्य करता था, वह किसान आज आत्महत्या कर रहा है । जिस किसान ने मुगल सत्ता के आगे हार नही मानी, जिसने ब्रिटिश सत्ता को आगे बढ कर ललकारा, जिसने वैशाखी को अमृत पूर्व बना दिया और जो खंडे की धार पर भंगड़ा का नृत्य करता है वही किसान अपनी ही तथाकथित सरकार की विदेशी आर्थिक नीतियों के फंदे में इस कद्र फंस गया है कि उसे आत्महत्या के सिवा कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। जो सूरा दीन के हेत लडता था वे आज इतना दीन हीन हो गया है कि सरकार की आर्थिक नीतियों के चौराहे पर दम तोड रहा है। आज वैशाखी के पर्व पर इस प्रश्न पर विचार करना आवश्यक है और हो सकता है कि इस प्रश्न का उत्तर भी पंचनद की उसी धरती से निकले जहां से कभी अधर्म से लडने के लिए खालसा का उत्तर निकला था। विदेशी सत्ता से लडने का अर्थ केवल एक खास शक्ल सूरत के आदमियों से लडना नहीं होता बल्कि इसका अर्थ उन लोगों से लडना है जो बाहर से भारतीय शक्ल सूरत के होते हुए भी अंदर से लंदन, वाशिग्टन या बीजिंग से जुडे हैं । सरकार की नीतियां ऐसी होनी चाहिए जिसका लाभ, जैसा कभी गांधीजी ने कहा था कि निम्नतम आदमी तक पहुंचना चाहिए। यह नीतियां ऐसी नहीं होनी चाहिए जिससे जिसकी प्रशंसा अमेरिका और चीन करे क्योंकि इस प्रशंसा का अर्थ है उनके हितों की पूर्ति कर रही है । यह नीतियां ऐसी भी नहीं होनी चाहिए जो शिखर पर अंबानी पैदा करे और धरातल पर आत्महत्या कर रहे किसानों की लाशों का ढेर बिछा दे । वैशाखी के पर्व पर इन प्रश्नों से जूझने का संकल्प लेना होगा ।

- डा.कुलदीप चंद अग्निहोत्री